Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

बालमुकुन्द गुप्त जी के व्यंग्यात्मक निबन्ध

Sonia[1]* Dr. Praveen Kumar[2]

[1] Research Scholar, Ph.D. (Hindi), OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Hindi Department, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – ***लेखन की व्यंग्यात्मक विधा गुप्त जी के लिए एक साहित्यिक विरासत थी। गुप्त जी के जीवनकाल में जब देश की सामाजिक व्यवस्था बिखराव की ओर अग्रसर थी, भारतीय रीति-रिवाज पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से क्षीण हो रहे थे, देश में गरीबी बढ़ रही थी और सहस्रों लोग गृह तथा वस्त्रविहीन होकर भटक रहे थे। अंग्रेजी साम्राज्य के प्रतिनिधि भारत में अंग्रेजी राज्य की जड़ें गहरी जमाने में लगे हुए थे। ऐसी स्थिति पर प्रहार करने तथा राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए गुप्त जी ने व्यंग्यात्मक लेखन का सहारा लिया।***

----------X----------

गुप्त जी के प्रमुख व्यंग्यात्मक निबन्धों का विवरण इस प्रकार है-

शिवशम्भू के चिट्ठे और खत:

1. लार्ड बनाम कर्जन:

प्रस्तुत व्यंग्यात्मक लेख में गुप्त जी लार्ड कर्जन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि उन्हें इस देश का वायसराय बनकर आये पाँच वर्ष होने वाले हैं और उन्होंने अब तक इस देश के हितार्थ कोई भी कार्य नहीं किया हैं। वे लार्ड कर्जन की कार्यप्रणाली पर व्यंग्य करते हुए उन्हें इस बात का अहसास कराने की कोशिश करते हैं कि उन्होंने इमारतें बनवाने, मूर्तियाँ लगवाने और अनेक बेफिजूल के कार्यों को करने में अपना समय व्यतीत किया है अब उनके जाने का समय आ गया है, अब उन्हें चाहिये कि वे कुछ ऐसे कार्य करें, जिससे उनके वापिस लौटने पर भारत की जनता उन्हें याद रखे। प्रस्तुत व्यंग्य निबन्ध 'भारत मित्र' पत्र में 11 अप्रैल सन् 1903 को प्रकाशित हुआ था।

2. श्रीमान् का स्वागत:

'भारत मित्र' के 16 नवम्बर 1904 के अंक में प्रकाशित इस व्यंग्यात्मक लेख में गुप्त जी ने लार्ड कर्जन के दूसरी बार भारत का वायसराय बनकर आने पर उनके पहले वाले कार्यकाल को लेकर व्यंग्य बाण कसे गये हैं कि जब उन्होंने पहले इस देश के लिए कुछ नहीं किया था तो भला अब उनसे इस दिशा में क्या आशा की जा सकती है। अगर भारतीय जनता का बस चले तो वे लार्ड कर्जन को दोबारा भारत में आने ही न दें। वे कर्जन की स्वयं की कथनी और करनी के अंतर पर व्यंग्य बाण कसते हैं और अंत में कर्जन का मजाक उड़ाते हुए भारतवासियों से कहते हैं कि कर्जन के शासन में वे भय न करे, सब ओर आनन्द ही आनन्द है। चैन से भंग पियो और मौज उड़ाओ।[1] जबकि वास्तविकता बिल्कुल इसके विपरीत थी।

3. वायसराय का कत्तव्य:

प्रस्तुत व्यंग्यात्मक लेख में गुप्त जी भारत के वायसराय को भारत के हित में कुछ अच्छे कार्य करने का आह्वान करते हैं। वे उन्हें अहसास कराते हैं कि इस देश के देशी राजाओं ने उन्हें सर माथे बिठाया है, भारतीय जनता को आपसे बहुत आशायें हैं और आपने स्वयं भारत को अपनी कत्तव्यभूमि कहा है अतः आपका स्वयं का यह फर्ज बनता है कि आप अपना कत्तव्य निभाएँ ताकि स्वदेश लौटने पर आप हक से कह सकें कि आपने भारत की प्रजा का मन भी जीता था।

4. पीछे मत फेंकिये:

प्रस्तुत व्यंग्य लेख 17 दिसम्बर 1904 में 'भारतमित्र' में प्रकाशित हुआ था जिसमें गुप्त जी ने तत्कालीन भारतीय वायसराय की तारीफों के पुल बाँधते हुए उनकी दूसरे वायसरायों से तुलना कर समस्त देश में अंग्रेजी शासन की सत्ता की तारीफ करते हुए व्यंग्यबाण कसे कि इतना सब होने के बावजूद भी उन्होंने भारतीयों की स्थिति सुधारने के लिए कुछ नहीं किया। यदि वे इस दिशा में कुछ कदम उठाते तो फायदा अंग्रेजी सरकार का ही था क्योंकि भारतीय हर क्षेत्रों में

www.ignited.in

अंग्रेजों की बराबरी करने में सक्षम थे, सिवाय अपना रंग और भाग्य उनके सम्मान कर पाने में।

वे उन्हें 30 करोड़ भारतीयों को गिरती दशा से उठाने के बदले उनके कत्तव्यों को पूर्ण करने के पश्चात् होने वाले लाभों से भी उन्हें अवगत कराते हैं, क्योंकि वे इसी 50 करोड़ जनता के शासक हैं। गुप्त जी इसी जनता को पीछे न फेंकने की बजाय इनका स्तर ऊँचा उठाने का अनुरोध करते हैं।

5. आशा का अंत:

गुप्त जी ने प्रस्तुत व्यंग्य निबन्ध में भारतीयों के उस आशा के अंत का वर्णन किया है जो उन्होंने लार्ड कर्जन से लगा रखी थी कि वे भारतीय जनता की भलाई के लिए कुछ करेंगे, परन्तु अब उनकी आशा का अन्त हो गया है जब लार्ड साफ ने अपने कार्यों और वक्तव्यों से यह स्पष्ट कर दिया है कि वे भारतीयों के भले के लिए कुछ करने वाले नहीं है। भारतीयों की निराशा का वर्णन करते हुए गुप्त जी कहते हैं-

"किस्मत पे उस मुसाफिरे खस्ता के रोइये।

जो थक गया हो बैठ के मंजिल के सामने।।"[2]

गुप्त जी लार्ड पर व्यंग्य बाण छोड़ते हुए कहते हैं कि न यहाँ की जनता आपको पसंद करती है और न आप भारतीय जनता को, फिर भी आप यहाँ के शासक बने हुए हैं। यह सोच-सोचकर शिवशम्भु शर्मा का दिमाग घूम जाता है।

6. एक दुराशा:

प्रस्तुत व्यंग्यात्मक निबन्ध में गुप्त जी ने प्राचीन भारतीय राजाओं कृष्ण, राम, विक्रमादित्य आदि का जिक्र करते हुए भारतीय जनता संग उनके होली जैसे त्यौहारों में शामिल होने व आज के अंग्रेजी वायसराय द्वारा भारतीय जनता की अनदेखी करने का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। गुप्त जी कहते हैं कि भारतीय जनता के लिए इससे बड़ी दुराशा क्या होगी कि वे न तो अपने राजा के बारे में कुछ जानते हैं और न ही उन्होंने कभी उसे देखा है, वो तो सिर्फ विदेश में ही रहा है। अंत में वे राजा के प्रतिनिधि को ही उद्धव के समान भारतीय जनता के दुःखों को कम करने की सलाह देते हैं।

7. बिदाई सम्भाषण:

लॉर्ड कर्जन के बार-बार इस्तीफा देने की धमकियों से दुःखी होकर आखिरकार अंग्रेजी दुश्मन ने उन्हें अपना पद छाड़ने का आदेश दे दिया, जिसकी लॉर्ड को उम्मीद नहीं थी। चूंकि अब लार्ड भारत में कुछ दिनों के मेहमान हैं और अब वे जितने दिन तक भारत में हैं, उन्हें अपने लौटने का ग़म और पद से हटाये जाने की बेइज्जती सालती रहेगी। लॉर्ड की ऐसी दशा में गुप्त जी अपने व्यंग्य लेख 'विदाई सम्भाषण' में उन्हें भारतीयों के प्रति किए गए नकारात्मक कार्यों को याद करवाते हुए यह बताने का प्रयास करते हैं कि यदि वह अच्छे कार्य करते तो भारतीय जनता को आपके जाने का बेहद दुःख होता, परन्तु आज स्थिति बिल्कुल विपरीत है, वह आपके लौटन पर खुशियाँ मना रही है।

'भारत मित्र' के 2 सितम्बर 1905 के अंक में प्रकाशित प्रस्तुत लेख में गुप्त जी लॉर्ड द्वारा अपने कार्यकाल में किए गए घृणित कार्यों को स्मरण कराकर उन्हें बेहद शर्मिन्दा करने के लिए अपने व्यंग्यात्मक शैली का चमत्कारपूर्ण ढंग से प्रयोग करते हैं।

8. बंग-विच्छेद:

16 अक्तूबर को बंगाल में हुआ विभाजन लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल का अन्तिम घृणित कार्य था, जिस पर वह बेहद खुश था। उसकी इसी खुशी पर व्यंग्य के रूप में लिखे अपने इस लेख में गुप्त जी लॉर्ड को लक्षित कर कहते हैं कि आपके शासनकाल में बंग-विच्छेद इस देश के लिए अन्तिम विषाद और आपके लिये अन्तिम हर्ष है। इस प्रकार के विषाद और हर्ष, इस पृथ्वी के सबसे पुराने देश की प्रजा ने बारम्बार देखे हैं। अपनों से लड़कर आपकी इज्जत गई और आपकी कुर्सी। वे कहते हैं कि ऐसे विभाजन और स्थानान्तरण भारतीय जनता ने पहले भी देखे और भुगते हैं। अगर भारतीय जनता तुगलक शासक के कहने पर दिल्ली से दौलताबाद और फिर वापिस दिल्ली बस सकती है तो क्या वह लॉर्ड के इस कार्य 'बंग-विच्छेद' को बर्दाश्त नहीं कर सकती? बंग देश की भूमि जहाँ थी, वहाँ है इस घटना से भारतीय जनता टूटी नहीं बल्कि एक-दूसरे से और अधिक मजबूती से जुड़ी है। हाँ! इस विभाजन से एक बात भारतीयों के हृदय में घर कर गई है कि अब अंग्रेजों का भक्तिभाव करना वृथा है, प्रार्थना करना वृथा है और आगे रोना वृथा है, दुर्बल की वह बात नहीं सुनते।[3]

9. आशीर्वाद:

'भारत मित्र' पत्र के 30 मार्च सन् 1907 के अंक में प्रकाशित व्यंग्यात्मक निबन्ध 'आशीर्वाद' में गुप्त जी ने अंग्रेजों के साम्राज्यवादी नीति का विरोध करते हुए भारतीयों में देश भक्ति की भावना जगाने का प्रयास किया है। अंग्रेजों द्वारा अपने एवं वायरसरायों की मूर्तियाँ स्थापित करने व उस पर सहस्रों रुपये खर्च करने व दूसरी और बदहाल भारतीय जनता

www.ignited.in

की अनदेखी करने के अंतर पर व्यंग्यबाण चलाये हैं। गुप्त जी ने प्रस्तुत लेख में भगवान से प्रार्थना की है कि जिन राष्ट्रभक्त लेखकों, देशभक्तों की अंग्रेजी सरकार पकड़कर बेवजह अकारण जेलों में बंद कर रही है, उन्हें सजा काटने की शक्ति दे, जिससे हम समझे कि भारत हमारा है और हम भारत के। इस देश के सिवा हमारा कोई ठिकाना नहीं रहे, इसी देश में चाहे जेल में चाहे घर में। जब तक जियें और जब प्राण निकल जायें तो यहीं की पवित्र मिट्टी में मिल जायें।

10. लॉर्ड मिन्टो का स्वागत:

लॉर्ड कर्जन के बाद भारत के नए गवर्नर जनरल लॉर्ड मिन्टों का स्वागत करते हुए गुप्त जी 'भारतमित्र' के 23 सितम्बर सन् 1905 के अंक में प्रकाशित अपने प्रस्तुत लेख में लिखते हैं कि भारतीय जनता को आपके आगमन से बहुत आशा बंधी है कि आप पूर्व वायसरायों से विपरीत 30 करोड़ भारतीय जनता की भलाई के लिए कुछ अच्छे कार्य अवश्य करेंगे, वे पूर्ववर्ती वायसरायों की बात और करनी पर ध्यान न देकर भारतीय जनता के कष्टों व वास्तविक स्थिति को समझते हुए अच्छे कदम उठायेंगे।

पूर्ववर्ती वायसरायों के कार्यों, भारतीय जनता की वास्तविक स्थिति एवं उनकी नये वायसराय से उम्मीदों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हुए गुप्त जी अंत में मिन्टों साहब से कहते हैं-"जो बात आपको भली लगे, वही कीजिये-कत्र्तव्य समझिये वही कीजिये। इस देश की प्रजा को अब कुछ कहने-सुनने का साहस नहीं रहा। अपने भाग्य का उसे भरोसा नहीं, अपनी प्रार्थना के स्वीकार होने का विश्वास नहीं। उसने अपने को निराशा के हवाले कर दिया है।"[4] अंत में गुप्त जी सारी स्थिति का वर्णन ब्यान कर अन्तिम निर्णय लार्ड मिन्टो के हाथों में छोड़ देते हैं।

11. मार्ली साहब के नाम:

भारत सचिव मार्ली साहब को सम्बोधित करके लिखे अपने व्यंग्य लेख में गुप्त जी ने उन्हें एक अच्छा शासक, न्यायप्रिय इन्सान की संज्ञा देते हुए उनकी तारीफ में अनेक बातें कहीं जिससे भारतवासियों को उनके भारत में नियुक्त होने की बेहद खुशी है। परन्तु गुप्त जी को उनकी कथनी और करनी में व्यापक अन्तर पाकर हैरान होते हैं। वे जहाँ भारतीयों के भले के लिए अनेक कार्य करने की घोषणा करते हैं और बंगाल विभाजन को बुरी घटना करार देते हैं, वहीं वे उनके द्वारा बंगाल विभाजन को निश्चित विषय करार देने की घोषणा व कथनी पर उन्हें भी पूर्व वायसरायों जैसा करार देते हैं, जिन्होंने इस देश के लिए कोई अच्छा कार्य नहीं किया, सदैव भारतीय हितों की अनदेखी ही की है।

गुप्त जी मार्ली साहब का असली चेहरा प्रकट होने पर अंत में कहते हैं कि भारतवासियों का जब चाहे भला हो या बुरा, उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं है। उन्हें ईश्वर पर विश्वास है और काल अनन्त है। कभी न कभी तो भले का समय आयेगा। भारतवासियों को अब चिन्ता केवल यही है कि उनको देश सचिव साधुवर मार्ली साहब को अपनी चिरकाल से एकत्र की गई कीर्ति और सुयरा को अपने वर्तमान पद पर कुर्बान न करना पड़े। भारतवासी आपको साधु समझते हैं। उन्हें अपनी वर्तमान दशा की परवाह नहीं है। परन्तु आपकी इज्जत का उन्हें ख्याल है। कहीं आप राजनीतिक पद के लोभ से अपने साधु पद को देहाती गधा न बना बैठें।

'अपने सिर का तो हमें कुछ गम नहीं,

खम न पड़ जाये तेरी तलवार में।।'[5]

संदर्भ:

1. डॉ. नत्थन सिंह, बालमुकुन्द ग्रन्थावली, पृ. 124
2. वही, पृ. 149
3. वही, पृ. 153
4. वही, पृ. 160
5. वही, पृ. 163

Corresponding Author

Sonia*

Research Scholar, Ph.D. (Hindi), OPJS University, Churu, Rajasthan

www.ignited.in